P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारतीय संस्कृति पर भूमण्डलीकरण का प्रभाव

कृष्णा
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
जे0 एन0 यू0,
विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

भारतीय संस्कृति धर्म, साहित्य, कला समुदायों और जीने के तरीकों में अमीर हो गया उसके तौर तरीकों में गिरावट आ गयी है। यह गिरावट भारतीय संस्कृति, सभ्यता धर्म, कला साहित्य और सीमा शुल्क के लिए एक प्रमुख कारण है जो पश्चिमी संस्कृति के विस्तार के कारण है। वैश्वीकरण के प्रभाव के दौरान प्रारम्भिक दौर और आज के रूप में सामाजिक और सांस्कृतिक पैटर्न के विभिन्न प्रवृतियों का परीक्षण करके पता लगाया जा सकता है।

मुख्य शब्द : भारतीय, संस्कृति, भूमण्डलीकरण, प्रभाव।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है जो उदारवादी और लोक कल्याण की भावना से समन्वित है। जिस प्रकार मानव शरीर से आत्मा अलग हो जाने पर शरीर का अस्तित्व समाप्त हो जाता है उसी प्रकार किसी राष्ट्र की संस्कृति छिन्न भिन्न होने अथवा नष्ट हो जाने पर उसका विश्व में कोई स्थान नही होता इस कारण संस्कृति की समाज विशेष या राष्ट्र विशेष की परिचायक मानी जाती है। जो जनजीवन के समस्त तत्वों के साथ धर्म, दर्शन, कला, साहित्य विश्वास, नैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों की सनातन परम्पराएं भारतीय संस्कृति की परिचायक है जो व्यक्तिनिष्ठ ना होकर समाज निष्ठ है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. वैश्वीकरण का मुख्य उद्देश्य पूरे विश्व को एक करना है।
2. अर्थशास्त्र के दृष्टिकोण से मुख्य उद्देश्य सभी देशों एवं वैश्विक बाजार उपलब्ध कराकर सस्तें दर पर सामान उपलब्ध कराना।
3. सामाजिक दृष्टिकोण से प्रमुख उद्देश्य ऐसा विश्व बनाना जिससे हर एक देश की संस्कृति को जाना जा सके।

संस्कृति का अर्थ

व्युत्पत्ति की दृष्टि से संस्कृति, समा (उत्तम)+कृति (चेष्टाऐं) का अर्थ उत्तम कृति या समयक चेष्टाऐं देह, प्राण, मन, बुद्वि आदि किसी इन्द्रिय की हो सकती है। इनका क्षेत्र लौकिक या पारलौकिक हो सकता है। श्रुति, स्मृति, पुराण आदि सर्वोच्च कृतियाँ है इनके निर्देश एवं विधान सम्यक चेष्टाऐं है। संस्कृति इन्ही चेष्टाओं का आगार है जैसा कि डा0 सत्यकेतु विद्यालंकार ने कहा है मनुष्य अपनी वृद्धि का प्रयोग कर संस्कृति में वसुधैव कुटुम्बकम् सर्वेभवन्तु सुखिनः को अपनाया गया है तथा जिस धर्म को एष धर्मः सनातनः कहकर प्रतिष्ठित किया गया है यह त्रिविध त्रिमार्ग एवं त्रिकर्म कृत है।

अन्तरात्मा, मानसिक जगत एवं स्थूल जगत में ईश्वरीय सत्ता को स्वीकार करना ही इसका त्रिविधित्व है। ज्ञान भक्ति एवं कर्म इन तीन मार्गो से जुड़ा होने के कारण भारतीय धर्म त्रिमार्ग गामी है। यह धर्म सत्य, प्रेम और शान्ति के प्रति दायक होने से त्रिकर्म कृत्य है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति है। जैसे व्यक्तिधर्म, जातिधर्म, राष्ट्रधर्म युगधर्म, आश्रमधर्म आदि। मनु स्मृति में भी इस प्रकार कहा गया है– स्वं स्वं चरित्रम् शिक्षरेन पृथिव्यां सर्व मानवाः।

भूमण्डलीकरण का अर्थ

विश्व की नई आर्थिक प्रक्रिया जिसे भूमण्डलीयकरण कहा जा रहा है यह एक घटना न होकर इसकी जड़ें दुनियाँ की बड़ी शक्तियों जिन्हें अमीर देश या साम्राज्यवादी शक्तियां भी कहा जाता है के पारस्परिक युद्ध के पश्चात् हुए उनके विध्वंस में समाहित है। विश्व की राजनीति मे अपना वर्चस्व बनायें रखने तथा घरेलू मोर्चे पर होने वाले जन आन्दोलन पर अंकुश लगाने के लिए शाक्तिशाली राष्ट्रों ने आर्थिक साम्राज्य पुनः प्रक्रिया शुरू हुई जिसे भूमण्डलीकरण नाम दिया जा रहा है।

इस प्रकार विभिन्न देशो के बीच निर्वाध आर्थिक सम्बधों की ऐसी प्रक्रिया जो एक निश्चित और सर्वमान्य अन्तर्राष्ट्रीय नियमों तथा शर्तो से

निर्देशित होती है। जो विश्व में वित्त बाजार,राष्ट्रों और अविकसित तकनीकी का ऐसा मिला जुला रूप है जिसमें विश्व के देशों को तूफानी गति से एक दूसरे को अत्यन्त करीब ला दिया है।

स्पष्ट है कि आर्थिक सहयोग व रिश्तों की गहराई तथा व्यापकता के दायरें में कही न कही राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध भी आते है दो देशों के रिश्तों में उन देशो की प्रभुसत्ता, कानून, परम्पराएं समसामायिक प्राथमिकताएं और सांस्कृतिक मान्यताएं अवरोधकों से समझौता करना उन्हें बदलना किसी न किसी तरह पार करना जरूरी है।

भूमण्ड़लीकरण का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव

भूमण्डलीकरण वस्तुतः एक बाजार है जो मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने देता उसे खरीददार या विक्रेता समझकर बाजार की वस्तु बना देता है। जबकि हमारी अवधारणा समग्र विश्व को प्रेम, करूणा आदि मानवीय मूल्यों में बॉधने का था वर्ष 1991–1992 के पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था में उदारीकरण की प्रक्रिया शुरू की गई जिससे भारत की वित्तीय स्थिति पूँजी–निवेश के फलस्वरूप भुगतान संतुलन में सुधार व विदेशी मुद्रा में वृद्धि हुई मगर दूसरी ओर व्यापक स्तर पर उद्योग धंधें बंद हुए लाखों मजदूरों, कर्मचारियों की छँटनी हुई । साथ ही रोजगार के नये क्षेत्र खुले लेकिन पुराने क्षेत्रों का दायरा सिकुड़ता गया 1998 में स्वदेशी के नारे से प्रभावित होकर मतदाताओं ने भाजपा में विश्वास व्यक्त किया मगर यह सरकार भी लोगों के विश्वास की रक्षा नहीं कर पाई और एक के बाद एक उदारवादी नीतियों को आगे बढ़ाना शुरू किया जिस तरह से भूमण्डलीयकरण के दबावों के आगे घुटने टेके उससे स्पष्ट हो गया कि जो भी पार्टी सत्ता में आये भारतीय समाज का सम्पन्न वर्ग का समर्थन बढ़ेगा।

1975–76 सैटेलाइट इंस्ट्रक्सन टी0वी0 एक्सपेरिमेन्ट का प्रयोग भारत में हुआ इस परियोजना के अन्तर्गत अमेरिकी संचार उपग्रह ATS-6 उपग्रह की सेवाएं कृषि परिवार नियोजन, स्वास्थ्य, आदि से सम्बधित शिक्षा के लिए अन्तरिक्ष तकनीक का प्रयोग 1986 में टी0वी0 का प्रयोग आम लोगों तक पहुँचा जिसने राष्ट्र की सीमाओं को तोड़कर समग्र विश्व को एक विश्वग्राम में बदलकर भूमण्डलीकरण की अवधारणा को स्वीकार किया।

विकास मूलक जनसंचार माध्यम

आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के माध्यम से ग्रामीण समाज में शिक्षा की रोशनी कैसे पहुँचायी जाए। कृषि क्षेत्र में पैदावार कैसे बढ़ायी जाय, महिलाओं में शिक्षा के प्रति जागरूकता कैसें पैदा की जाए, कार्यक्रम संरचना के मूल में निहित अक्षर–अक्षर ज्योति जले फैले, शिक्षा का उजियारा का संदेश साक्षरता अभियान के लिए किया गया। लेकिन इलेक्ट्रानिक मीडिया से जन्मा जननायक रिश्वत लेते पकड़ा जाता है। गुण्डागर्दी और हिंसा को बढावा देने वाला नायक इसे मसल पावर व मनी पावर नाम देता है। अण्डरवर्ल्ड पर बनी फिल्में एवं भावुक व्यक्ति तथा किसी नारी के लिए जान देने वाला माफिया होता है। इस बाजारवाद की लड़ाई में नैतिक मानदण्ड , राष्ट्रीय दायित्व और राष्ट्र निर्माण जैसे उपक्रमों को तिलांजलि दे दी गयी है सस्ती कामुकता भरी हिंसात्मक प्रवृतियों को बढ़ावा देने वाली निकृष्टतम प्रवृतियों को उभारने वाली होड़ पनपने लगी है।

उपभोक्तावादी युग में 10–15 सालों में एक भी महानायक या महानयिका नहीं पैदा कर सका अलवत्ता स्टार अवश्य दिये है मीडिया और झट पटि़याँ नेताओं ने नये हीरो को जन्म दिया चन्द्रा स्वामी, दाउद इब्राहिम आदि तत्वों को उपभोक्तावादी संस्कृति के पुजारियों ने हीरो का दर्जा दे दिया अपसंस्कृति के खल नायकों ने विवेकान्द, अरविन्द, स्वामी रामतीर्थ,स्वामी सहजानन्द जैसे समाज नायकों को अपदस्थ कर दिया । इसकें दूसरे पहलू को देखे जब जीवन में कष्ट आये, अन्याय या शोषण बरदाश्त करना पडे तो व्यक्ति को डाकू माफ़िया या महान गुण्डा बन जाना चाहिए कोई ऐसा जनसंचार माध्यम नहीं जिसने वीरप्पन पर विशेष कार्यक्रम न प्रसारित किये हो। वह मगर का जिगर खाता है, वह घुटनों में किस जानवर का तेल लगाता है, वह जानवरों की भाषा किस तरह बोलता है वह एक पेड से दूसरे पेड़ पर किस तरह उछलता है इतने मिथ तो इलैक्ट्रिानिक मीडिया में धार्मिक और चमत्कारिक युगपुरूषों के बारे में नहीं दिखायें जाते लेकिन वीरप्पन को चमत्कारिक चरित्र बना दिया गया ।

चमत्कारिक चरित्र मीडिया से पैदा, पला बढ़ा नायक जिसमें सत्य निष्ठा नहीं होती लम्बा संघर्षशील जीवन नहीं होता वह जात पात , लिंगभेद और देश की सीमाओं से उपर उठकर बात नहीं करता न हीं किसी आदर्श के लिए प्राण गँवाता है। यहीं कारण है कि भूमण्डलीकरण संस्कृति में महात्मागाँधी, गौतम बुद्ध अब्राहम लिंकन, जान कनेडी, नेपोलियन के चरित्रों का आकर्षण नहीं है। सफलता ही सबकुछ है चाहे उसे जिस तरह प्राप्त किया जाए।

वर्चस्व होते विज्ञापन

I love रसना,

ठंडा ठंडा Cool Cool

Mango fruty, Fresh and Graicy, Effect सही Side Effect नहीं।

दाँतो में दर्द है नया Tooth Paste try किया।

तू आदमी है या अंडा ,ठंडा मतलब कोका कोला।

डी कम्पनी को आतकंवादी या क्रिमिनल कहते है लेकिन मेरे लिए तो भगवान है।

समाचार पत्रों को देखे।

प्रोडक्शन तो मेरे खून में हैं।

एक्शन हीरो की इमेज से निकलना चाहते है सुनील शेट्टी।

कुण्डली में मालामाल।

इस तरह दूरदर्शन व अखबारों से व्याकरण के नियमों की घोर अवहेलना की जा रहीं है। । बाजार की गणित ने मुहावरों को छीन लिया उनकी चुस्ती फुर्ती ओजस्विता और निर्भीकता भी हर ली हिन्दी प्रिंट मीडिया अपनी राष्ट्र भाषा राज भाषा की गरिमा नहीं बचा पा रहा है यह भूमण्डलीकरण दुष्चक्र है।

निष्कर्ष

इस प्रकार टी0वी0 के विज्ञापन पड़ोसी की जले जान आपकी बढ़ें शान इसी के साथ मुक्त उपहार ईनामी योजना एक के बदले दो से उपभोक्ता को अपनी ओर खीचने का उपक्रम जारी है। कौन बनेगा करोड़पति जैसे कार्यक्रम संस्कृति के नये आयाम को जन्म दे रहे है। वह दिन दूर नहीं जब देश की राष्ट्र भाषा दर्शन लोगों के विचार दूसरों द्वारा निर्धारित किये जायेंगे। लेकिन इस देश के इतिहास को देखे तो मुस्लिम आक्रमणकारी गौरीशंकर हूण यवन मुगल यहां तक कि अंग्रेजों ने भी इस देश की संस्कृति को एक हजार वर्षो में नहीं बदल पाये लकिन इलैक्ट्रॉनिक मीड़िया व प्रिंट मीडिया ने लगभग 20 वर्षो में ही तहस नहस कर दिया यदि यही स्थिति रहीं तो आने वाले दशक में ही हिंसा चोरी बलात्कार की घटनाएं हीं मीड़िया की सुर्खियों में रहेगी।

भारत एक कृषि आधारित देश है यहां की संस्कृति विशेषकार गाँवों में बसती है लेकिन औद्योगिक क्रांति एवं वैज्ञानिक युग के कारण खेती ने अपने मूल उद्देश्य से भटक गया है हरेक सिक्के के दो पहलू होते है फैसला हमें करना है हम किस पहलू को प्राथमिकता देते है वैश्वीकरण का मुख्य उद्देश्य पूरे विश्व को एक करना है।

आर्थिक दृष्टिकोण से देखे तो समस्त विश्व को सस्ते दर पर सामान उपलब्ध कराना, वहीं अगर समाजशस्त्रीय दृष्टिकोण देखें तो ऐसे विश्व बनाना जिससे हर एक देश की संस्कृति को जाना जा सके और सभी से एकाकार किया जा सकें अंत में यहीं कहना है भूमण्डलीकरण का एक मात्र उद्देश्य सभी को एक साथ मिल –जुलकर रहने की बात कही गयी है। पर हुआ इसका विपरीत विश्व भर ताकतवर देशों का बाजार बनकर रह गया है सभ्यता के नाम पर इन्हीं ताकतवर देशो की संस्कृति का अंधानुकरण करने लगे है जो कि गलत है और रही बात भारतीय संस्कृति पर पड़ने वाले प्रभाव की तो भारतीय संस्कृति अपने आप को समयानुसार ढाल लेती है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भाषा और साहित्य– डा0 माधव सोनटक्के।

भूमण्डलीकरण और ग्लोबल मीडिया : जगदीश चतुर्वेदी।

भूमण्डलीकरण विचार नीतिया और विकल्प : कमलनयन काबरा।

भारत में वैश्वीकरण प्रभाव और विकल्प (2012) असीम श्रीवास्तव।

एन.सी.ई.आर.टी.एन.आई.सी.इन।